

41899 - कुर्बानी के जानवर में किस उम्र को ध्यान में रखा जाना चाहिए

प्रश्न

क्या कुर्बानी के जानवर के लिए कोई विशेष उम्र है? क्या एक डेढ़ साल की गाय को कुर्बानी के रूप में ज़बह करना जायज़ है?

विस्तृत उत्तर

सर्व प्रथम :

उलमा रहिमहुमल्लाह इस बात पर सहमत हैं कि शरीअत ने कुर्बानी के जानवरों के लिए एक उम्र निर्धारित की है जिससे कम उम्र का जानवर ज़बह करना जायज़ नहीं है। जिस व्यक्ति ने उससे कम उम्र का जानवर ज़बह किया तो उसकी कुर्बानी पर्याप्त नहीं होगी।

देखिए: नववी की "अल-मजमू'अ" (1/176).

इस बात को दर्शनी वाली कई हदीसें वर्णित हुई हैं :

पहली हदीस:

उन्हीं में से वह हदीस है जिसे बुखारी (हदीस संख्या : 5556) और मुस्लिम (हदीस संख्या : 1961) ने बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा : मेरे मामा अबू बुर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने ईद की नमाज़ से पहले ही कुर्बानी कर ली थी। तो अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "तुम्हारी बकरी केवल मांस की बकरी है।" उन्हों ने कहा : "हे अल्लाह के पैगंबर, मेरे पास एक घरेलू बकरी का ज़ज़आ है।" एक रिवायत के अनुसार : "एक साल से कम की पठिया है।" और बुखारी की एक रिवायत (हदीस संख्या : 5563) में है कि: "मेरे पास एक ज़ज़आ है जो दो मुसिन्ना (अर्थात् दो दांत वाले दो जानवरों) से बेहतर है, क्या मैं उसे ज़बह करूँ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "उसे ज़बह कर लो, लेकिन तुम्हारे बाद यह किसी और के लिए मान्य नहीं है।" एक अन्य रिवायत के शब्द यह हैं कि : "यह तुम्हारे बाद किसी के लिए भी पर्याप्त नहीं होगा।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "जिसने नमाज़ से पहले ज़बह किया वह अपने लिए ज़बह करता है, और जिसने नमाज़ के बाद ज़बह किया तो उसकी कुर्बानी पूरी हो गई और उसने मुसलमानों के तरीके को पा लिया।"

इस हदीस से इंगित होता है कि बकरी का ज़ज़आ कुर्बानी के रूप में पर्याप्त नहीं है। ज़ज़आ का अर्थ आगे आ रहा है।

इब्नुल-कैयिम रहिमहुल्लाह ने "तह्जीब अस-सुनन" में फरमाया :

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन: (यह तुम्हारे बाद किसी की तरफ से भी कदापि पर्याप्त नहीं होगा)

यह निश्चित रूप से इस बात को नकारता है कि वह उनके बाद किसी और की तरफ से पर्याप्त (मान्य) होगा।" इब्नुल कैयिम की बात समाप्त हुई।

दूसरी हदीसः

मुस्लिम (हदीस संख्या : 1963) ने जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा: अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "तुम मुसिन्ना जानवर ही कुर्बानी करो, सिवाय इस के कि तुम्हारे लिए कठिनाई हो तो भेड़ का जज़आ कुर्बानी करो।"

इस हदीस में भी स्पष्ट रूप से बयान किया गया है कि मुसिन्ना जानवर ही ज़बह करना ज़रूरी है, सिवाय भेड़ के कि उसका जज़आ ज़बह करना पर्याप्त होगा।

नववी ने "शर्ह मुस्लिम" में फरमाया :

विद्वानों का कहना है : ऊंट, गाय और भेड़-बकरी में से सनिया और उससे ऊपर उम्र वाले जानवर को मुसिन्ना कहा जाता है। यह इस बात को स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि भेड़ को छोड़कर किसी अन्य जानवर का जज़आ किसी भी परिस्थिति में ज़बह करना जायज़ नहीं है।" उद्धरण का अंत हुआ।

हाफिज़ इब्ने हजर ने "तल्खीसुल हबीर" (4/285) में फरमाया :

"हदीस के प्रत्यक्ष अर्थ की अपेक्षा यह है कि भेड़ का जज़आ उसी समय पर्याप्त होगा जब वह मुसिन्ना ज़बह करने में असमर्थ हो। जबकि विद्वानों की आम सहमति इसके विपरीत है। इसलिए इस हदीस की व्याख्या इस तरह की जाएगी कि उसे बेहतर के अर्थ में लिया जाएगा, और उसका मतलब यह होगा कि: मुस्तहब और बेहतर यह है कि वे मुसिन्ना ही ज़बह करें।" उद्धरण समाप्त हुआ।

इसी तरह की बात नववी ने "शर्ह मुस्लिम" में कही है।

तथा "औनुल माबूद" में फरमाया :

"यही व्याख्या करना निर्धारित (आवश्यक) है।" उद्धरण का अंत हुआ।

फिर उन्होंने कुर्बानी में भेड़ के जज़आ के जायज़ होने पर दलालत करने वाली कुछ हदीसों का उल्लेख किया है, उन्हीं में से उक्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि उन्होंने कहा : "हमने अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ भेड़ के जज़आ की कुर्बानी की।" इसे नसाई (हदीस संख्या : 4382) ने रिवायत किया है। हाफिज़ इब्ने हजर ने कहा है कि इसकी इस्नाद मज़बूत है और अल्बानी ने सहीह नसाई में इसे सही कहा है।

तथा "अल-मौसूअतुल फिल्हिय्या" (5/83) में कुर्बानी की शर्तों के उल्लेख में आया है :

दूसरी शर्तः यह है कि वह जानवर कुर्बानी की उम्र को पहुंच चुका हो, इस प्रकार कि ऊंट, गाय और बकरी में से सनिया या सनिया से बड़ा और भेड़ में जज्ज़ा या जज्ज़ा से बड़ा हो। अतः भेड़ के अलावा में से सनिया से छोटे, और भेड़ में से जज्ज़ा से छोटे जानवर की कुर्बानी जायज़ नहीं है . . . इस शर्त पर फुक्रहा सहमत हैं, लेकिन सनिया और जज्ज़ा के अर्थ की व्याख्या में उनके बीच मतभेद है।" उद्धरण का अंत हुआ।

इब्ने अब्दुल बर्र रहिमहुल्लाह ने कहा :

"मुझे इस विषय में किसी भी मतभेद का पता नहीं है कि बकरी में से और भेड़ के अलावा बलि दिए जाने वाले किसी भी जानवर में से जज्ज़ा की कुर्बानी जायज़ नहीं है, बल्कि इन सभी में से केवल सनिया और उससे बड़े आयु वाले जानवर ही की कुर्बानी जायज़ है। और सुन्नत के अनुसार भेड़ के जज्ज़ा की बलि देना अनुमत है।"

"तर्तीबुत्तम्हीद" (10/267) से उद्धरण का अंत हुआ।

नववी ने "अल-मज्मूआ" (8/366) में फरमाया :

"उम्मत की इस बात पर सर्वसहमति है कि ऊंटों, गायों और बकरियों में से सनिया, तथा भेड़ में से जज्ज़ा ही पर्याप्त होगा। और ये सभी वर्णित जानवर पर्याप्त हैं, सिवाय इसके कि हमारे कुछ साथियों ने उल्लेख किया है कि इब्ने उमर और अज़-जुहरी का कहना है कि : भेड़ का जज्ज़ा प्रयाप्त नहीं है। तथा अता और औज़ाई से वर्णित है कि ऊंटों, गायों, बकरियों और भेड़ों में से जज्ज़ा पर्याप्त होगा।" उद्धरण का अंत हुआ।

दूसरी बात :

जहां तक कुर्बानी के जानवर में निर्धारित रूप से आवश्यक आयु की बात है तो इसके संबंध में विद्वानों के बीच मतभेद है:

हनफिया और हनाबिला के निकटः भेड़ का जज्ज़ा वह है जो छः महीने का हो गया हो, तथा मालिकिया और शाफेइया के निकटः भेड़ का जज्ज़ा वह है जो एक वर्ष का हो गया हो।

बकरी का मुसिन्ना (सनिया) : हनफिया, मालिकिया और हनाबिला के निकट जो एक वर्ष की आयु का हो गया हो, तथा शाफेइया के निकट जो दो साल की उम्र का हो गया हो।

गाय का मुसिन्ना: हनफिया, शाफेइया और हनाबिला के निकट जो दो साल की उम्र का हो गया हो, तथा मालिकिया के निकट जो तीन साल की उम्र का हो गया हो।

ऊंट का मुसिन्ना: हनफिया, मालिकिया, शाफेइया और हनाबिला के निकट जो पांच वर्ष की आयु का हो गया हो।

देखें : “बदाएउस-सनाए” (5/70), “अल-बहू अर्-राइक्न” (8/202), “अत्-ताज वल-इकलील” (4/363), “शर्ह मुख्तसर खलील” (3/34), “अल-मजमूअ” (8/365), “अल-मुग्नी” (13/368)।

शैख इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह ने “अहकामुल उज़हिया” में फरमाया :

“ऊंट का सनिया वह है: जो पांच साल की आयु का हो गया हो। गाय का सनिया वह है: जो दो साल की आयु का हो गया हो। बकरी का सनिया वह है: जो एक वर्ष की आयु का हो गया हो। जज़आ: वह है जो आधे वर्ष की आयु का हो गया हो। अतः ऊंटों, गायों और बकरियों में से सनिया से कम आयु, तथा भेड़ में से जज़आ से कम आयु की कुर्बानी सही (मान्य) नहीं है।” अंत हुआ।

तथा स्थायी समिति के फतावा (11/377) में आया है :

“शरई प्रमाणों से पता चलता है कि छह महीने की उम्र का भेड़, एक वर्ष की आयु की बकरी, दो साल की उम्र की गाय और पांच साल की आयु का ऊंट कुर्बानी के रूप में पर्याप्त होगा। जो जानवर इससे कम आयु का होगा वह न हदी के रूप में प्रयाप्त हो गा और न ही कुर्बानी के रूप में काफ़ी होगा। यही वह हदी है जो उपलब्ध है, क्योंकि कुरआन और सुन्नत के प्रमाण एक दूसरे की व्याख्या करते हैं।” उद्धरण का अंत हुआ।

कासानी ने “बदाएउस-सनाए” (5/70) में कहा :

“और इन उम्रों को उन चीज़ों के साथ अनुमानित करना जो हमने कहा है, कमी को रोकने के लिए है, वृद्धि को रोकने के लिए नहीं है; यहां तक कि यदि किसी ने उससे कम आयु के जानवर की कुर्बानी की तो वह जायज़ नहीं होगा, और अगर उससे अधिक आयु के जानवर की कुर्बानी की तो वह जायज़ होगा और बेहतर होगा। तथा कुर्बानी में भेड़ का बच्चा, बकरी का बच्चा, बछड़ा और ऊंटनी का बच्चा जायज़ नहीं है, क्योंकि शरीअत में उन्हीं उम्रों (वाले जानवरों) का वर्णन हुआ है जिनका हमने उल्लेख किया है, और ये जानवर उन नामों से नहीं जाने जाते हैं।” उद्धरण का अंत हुआ।

इससे स्पष्ट हुआ कि दो साल से कम उम्र की गाय को ज़बह करना किसी भी इमाम के निकट कुर्बानी के रूप में पर्याप्त नहीं होगा।

और अल्लाह तआला ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान वाला है।